दिनांक :- 04-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (इतिहास)
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
पेपर :- चतुर्थ

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन में पश्चिमी साम्राज्यवाद का प्रसार

जापान :- चीन का निकटतम पड़ोसी जापान था। प्रारंभ में दोनों का संबंध दैत्यबौना का था। 19वीं शताब्दी के मध्य तक चीन जापान को अधीनस्थ राज्य समझता था तथा उसे बहुत निम्न कोटि का समझता था। किंतु 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में स्थिति बिल्कुल बदल गई। 1868 में मेईजी पुनर्स्थापना के बाद जापान का कायाकल्प हो गया। इसकी सैनिक शक्ति बढ़ गई। इसके भी पश्चिमी देशों की तरह

इसके उद्योग-धंधों का काफी विकास हुआ और यह साम्राज्यवादी जीवन में प्रवेश कर गया। इसने भी पश्चिमी देशों की तरह चीन की ओर नजर दौड़ाई।

चीन के साथ एक व्यापारिक और मैत्री संधि करने के लिए जापान का एक दूतमंडल चीन भेजा गया। चीन का विदेश मंत्रालय (Tsungli Yamen) जापान को समानता का दर्जा देने के पक्ष में नहीं था। इसने केवल उसे व्यापार करने की सुविधा दी। किंतु कुछ दिनों की बातचीत के बाद चीन के प्रतिनिधि ली-हुंग-युंग ने 1871 में जापानी प्रतिनिधि काउंट इतो सैतिन्सीन में मैत्री-संधि कर ली। इसके साथ सीमा शुल्क तालिका तथा वाणिज्य विनियमन जोड़ दिए गए। आधुनिक काल में इस संधि के बाद ही चीन और जापान का औपचारिक सम्बंध शुरू हुआ।

1874 में लुचू द्वीप (Loochoo Island) के क्षेत्राधिकार को

लेकर चीन जापान के बीच संघर्ष शुरू हो गया। उस वर्ष उस द्वीप के कुछ लोग जिनका जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, फार्मोसा की जंगली जातियों द्वारा मार डाले गए। चिरकाल से चीन और जापान लुचू द्वीप को अपना करद राज्य समझ रहे थे। जापान ने शीघ्र ही लुचू द्वीप पर अपनी प्रभुता का दावा किया और चीन से दुर्घटनाग्रस्त जहाज के यात्रियों के मारे जाने की क्षतिपूर्ती की माँग की। दूसरी ओर चीन ने लुचू द्वीप में जापान के अधिकार के दावे को गलत बतलाया और इसे चीन को सौंप देने की माँग की। इस प्रश्न के लेकर चीन-जापान में बड़ी सरगर्मी छा गई। जापान के सैनिकवादी तो इस प्रश्न पर दो हाथ करने को तैयार हो गए। उन्होंने तो फार्मोसा की जंगली जातियों को दबाने के लिए एक अभियान भी भेज दिया। किन्तु वे चीन के सुसुप्त दैत्य (Sleeping Dragon)

Scanned with CamScanner

या चीनी सम्राट के भय से डर गए और ब्रिटिश सरकार के हस्तक्षेप करने से मान गए।

ब्रिटिश प्रतिनिधि सर थामस वेड की मध्यस्थता से लुचू द्वीप के संबंध में चीन और जापान ने संघर्ष का रास्ता छोड़ दिया दोनों ने सुलहनामा कर लिया जिसके अनुसार चीन जापान को कुछ क्षतिपूर्ति देने के लिए तैयार हो गया। चीन ने यह भी आश्वासन दिया कि भविष्य में फार्मोसा की जंगली जातियाँ जापानी नाविकों को तंग नहीं करेंगी। सुलहनामे के बाद चीन ने फार्मोसा से अपनी सेना हटा ली।

लि-हुंग-यांग जापान को सन्देह की दृष्टि से देखता था। वह इस तथ्य को भली-भाँति जानता था कि चीन को किसी पश्चिमी देश की अपेक्षा जापान से अधिक भय है। 1879 में जापान ने अकारण ही बलपूर्वक लुचू द्वीप पर अधिकार कर लिया। जापान की इस पाशविक कार्रवाई ने लि के संदेह

Scanned with CamScanner

को विश्वास दिला दिया कि जापान के चीन के प्रति इरादे नापाक है।

चीन और जापान के बीच विवाद का एक दूसरा स्थल कोरिया था। कोरिया की प्राचीन सभ्यता संस्कृति अत्यंत ही गौरवपूर्ण रही है। एकान्तवासी राज्य (Hermit Kingdom) के नाम से प्रसिद्ध रहा है। किंतु यह काफी दिनों तक अपनी एकान्तता का पालन नही कर सका। शीघ्र ही यह चीन की छत्रछाया मे आ गया। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण चीन और जापान से काफी प्रभावित हुआ है। 19वी सदी के उत्तरार्द्ध में रूस ने भी इस ओर नजर दौड़ाई। 1860 के बाद एशियाई समुद्र मे रूस की उपस्थिति और अमुर घाटी मे उसके शक्ति-संवर्द्धन से जापान के कान खड़े हो गए। सुदूर पूर्व मे रूस की महत्वाकांक्षाओं से जापान चिन्तित हो उठा।

Scanned with CamScanner

वह सोचने लगा कि रूस भी कोरिया को निगलना चाहता है!
कोरिया अपनी भौगोलीक स्थिति के कारण चीन, जापान और रूस के बीच त्रिकोणात्मक संघर्ष का प्रतीक बन गया। कोरिया प्रायद्वीप चीन और जापान के बीच स्थित है और यह मंचूरिया से एक नदी द्वारा अलग किया जाता है। दक्षिण पूर्वी कोरिया सुमुद्र की ओर निकला हुआ है जो जापान के निकट है। 19वीं सदी के अंतिम भाग में चीन, जापान और रूस ने कोरिया को हड़पने का प्रयास किया। जापान को एक स्वतंत्र कोरिया से कोई चिन्ता नही थी, किंतु वह इसे एक शक्तिशाली राज्य के अधिकार में देखना नही चाहता था। अतः जापानी साम्राज्यवादी कोरिया में अपना प्रभाव क्षेत्र कायम करना चाहते थे। इस उद्देश्य से फरवरी 1876 में कोरिया से एक संधि की गई। इसके एक महत्वपूर्ण अनुच्छेद में कहा गया कोरिया जापान की तरह वह स्वतंत्र एंव संप्रभु राज्य है।

Scanned with CamScanner

जापान की इस घोषणा का उद्देश्य यह था कि वह पहले कोरिया को चीन के किसी भी तरह के प्रभाव से मुक्त कर ले उसके बाद वहाँ अपना नियंत्रण कायम कर ले। चीन को कोरिया की वफादारी पर विश्वास था, अतः उसने इस अनुच्छेद के महत्व की अपेक्षा कर ली।

जापान ने कोरिया के प्रति जो निति निर्धारित की उसके मुख्यतः तीन लक्ष्य थे। प्रथम, कोरिया किसी शक्तिशाली राज्य के अधिकार में न जाने पाए। चीन के अतिरिक्त रूस उस ओर नजरें गड़ाए हुआ था। कोरिया की उत्तरी सीमा पर रूस का एक बड़ा जहाजी अड्डा ब्लाडीवोस्तक कायम हो चुका था। जो जापान के लिए असहनीय था। द्वितीय, शताब्दियों से जापान साम्राज्य स्थापना का स्वप्न देख रहा था। कोरिया इसके लिए एक उपयुक्त क्षेत्र था।

Scanned with CamScanner